
इकाई 17 वस्तु एवं मुद्रा बाजारों का समन्वयन : प्रतिष्ठित एवं केन्जीय अवधारणाएँ

इकाई की रूपरेखा

- 17.0 उद्देश्य
- 17.1 प्रस्तावना
- 17.2 वस्तु बाजार संतुलन
 - 17.2.1 वस्तु बाजार के घटक
 - 17.2.2 निवेश-बचत समानता
 - 17.2.3 ब्याज दर एवं राष्ट्रीय आय के विभिन्न संयोजनों पर निवेश-बचत समानता
- 17.3 मुद्रा बाजार का संतुलन
 - 17.3.1 मुद्रा बाजार के घटक
 - 17.3.2 मुद्रा की माँग एवं आपूर्ति की समानता
- 17.4 वस्तु तथा मुद्रा बाजार का एकीकरण
 - 17.4.1 विभिन्न ब्याज दर राष्ट्रीय आय संयोजनों पर IS तथा LM वक्र
 - 17.4.2 वस्तु तथा मुद्रा बाजारों में संतुलन पुनः स्थापित करने के लिए कदम
- 17.5 क्लासिकी दृष्टिकोण : IS-LM वक्र विश्लेषण के माध्यम से
 - 17.5.1 क्लासिकी दृष्टिकोण का नीतिगत प्रभाव
- 17.6 केन्जीय दृष्टिकोण और IS-LM वक्र विश्लेषण
 - 17.6.1 केन्जीय दृष्टिकोण के नीतिगत अर्थ
- 17.7 सारांश
- 17.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
- 17.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

17.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित समझा सकेंगे :

- वस्तु बाजार संतुलन;
- मुद्रा बाजार संतुलन;
- वस्तु तथा मुद्रा बाजार का एकीकरण;
- वस्तु एवं मुद्रा बाजारों में असंतुलन की दशाएँ;
- संतुलन की पुनःस्थापना के लिए आवश्यक कदम;
- इस विषय में क्लासिकी अवधारणा और उसके नीतिगत अर्थ; तथा
- इस विषय में केन्जीय दृष्टिकोण और उसके नीतिगत अर्थ।

17.1 प्रस्तावना

यह इकाई वस्तु एवं मुद्रा बाजारों के एकीकरण से संबंधित है। आप इकाई 15 में वस्तु बाजार तथा इकाई 16 में मुद्रा बाजार का अध्ययन कर चुके हैं। आपने देखा था कि वस्तु बाजार का संतुलन ब्याज दर तथा राष्ट्रीय आय के अनेक संयोजनों पर संभव था। इसी तरह से मुद्रा बाजार भी ब्याज दर तथा राष्ट्रीय आय के अनेक संयोजनों पर संतुलन में हो सकता है। इस इकाई में हम इस प्रकार से दोनों बाजारों को इस प्रकार से इकट्ठा

लाएँगे कि ब्याज दर तथा राष्ट्रीय आय का वह संयोजन ज्ञात कर सकें जिस पर ये दोनों बाज़ार भी एक-साथ संतुलन में हों।

वस्तु एवं मुद्रा बाजारों का
समन्वयन : प्रतिष्ठित एवं
केन्द्रीय अवधारणाएँ

17.2 वस्तु बाज़ार संतुलन

वस्तु बाज़ार के संतुलन से आप इकाई 15 से ही परिचित हैं। वस्तु बाज़ार अथवा वास्तविक बाज़ार में संतुलन तभी होता है जब चक्रीय प्रवाहों में से रिसाव इन प्रवाहों में होने वाली वृद्धि के समान हो। इस वृद्धि में हम स्वतंत्र निवेश, सरकारी व्यय तथा निर्यात को रखते हैं— ये सभी व्यय राष्ट्रीय आय एवं ब्याज की दरों द्वारा निर्धारित बचत, कराधान और आयात आदि को शामिल करते हैं। इस प्रकार विभिन्न ब्याज दर— राष्ट्रीय आय संयोजनों पर हमें संतुलन की अनेक स्थितियाँ ज्ञात हो जाती हैं। इसी विश्लेषण से हमें वस्तु बाज़ार की अभाव एवं आधिक्य की स्थितियों की पहचान करने में भी सहायता मिलती है।

17.2.1 वस्तु बाज़ार के घटक

वस्तु घटक के मुख्य घटक हैं— निवेश, सरकारी व्यय तथा निर्यात। हम यह मानकर चल रहे हैं कि विदेशी पूँजी प्रायः प्रवाहशून्य है तथा कीमत स्तर पूर्व-निर्धारित है। ये तीनों घटक वृद्धियाँ हैं तथा स्वतंत्र मर्दे हैं जिनपर राष्ट्रीय आय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। इस बाज़ार के दूसरे घटक— बचत, कराधान तथा आयात हैं जो कि रिसाव हैं। बचतें राष्ट्रीय आय बढ़ने के साथ बढ़ती हैं हालाँकि ब्याज की दर में परिवर्तन का भी बचतों पर असर पड़ता है। कर भी राष्ट्रीय आय के स्तर के साथ-साथ बढ़ते हैं। कभी-कभी बचतों को प्रयोज्य आय का बढ़ता फलन भी माना जाता है। आयात भी सामान्यतः राष्ट्रीय आय के बढ़ने के साथ बढ़ते हैं। हालाँकि यह संभव है कि कुछ आयातों पर राष्ट्रीय आय का प्रभाव न पड़ता हो।

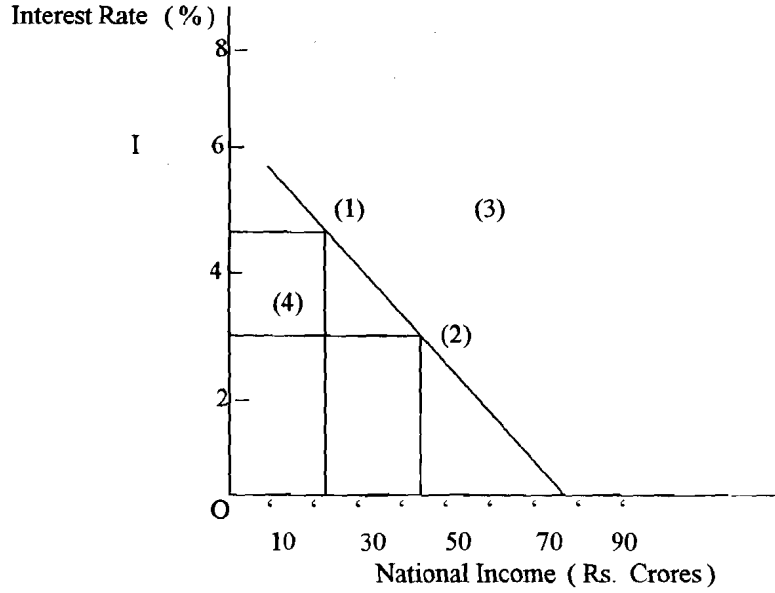
17.2.2 निवेश-बचत समानता

इकाई 15 में हमने बताया था कि ऐसी अर्थव्यवस्था, जिसमें न तो सरकार है और साथ-साथ यह बंद अर्थव्यवस्था (यानि इसमें निर्यात और आयात नहीं होते) में वस्तु बाज़ार में संतुलन उस स्थिति में सुनिश्चित होता है जब प्रत्याशित निवेश प्रत्याशित बचत के समान हो। यह समानता आगे समग्र माँग और समग्र पूर्ति एक-समान होते हैं, राष्ट्रीय आय का संतुलन स्तर कहलाता है और यही वस्तु बाज़ार में संतुलन का संकेत है।

आय का कोई अन्य स्तर जहाँ निवेश बचत के समान नहीं होता वहाँ समग्र माँग भी आपूर्ति के समान नहीं होती। अतः वस्तु बाज़ार में असंतुलन हो जाता है। यह असंतुलन दो प्रकार का हो सकता है— (1) वस्तु बाज़ार में आधिक्य, अर्थात् समग्र आपूर्ति समग्र माँग से अधिक हो— या बचत निवेश की अपेक्षा ज्यादा हो; और (2) वस्तु बाज़ार में अभाव—यहाँ समग्र आपूर्ति समग्र माँग से कम रह जाती है—या दूसरे शब्दों में बचत निवेश से कम पड़ती है।

17.2.3 ब्याज दर एवं राष्ट्रीय आय के विभिन्न संयोजनों पर निवेश-बचत समानता

विभिन्न ब्याज दरों तथा राष्ट्रीय आय के संयोजनों पर वस्तु बाज़ार के संतुलन इकाई 15 में IS वक्र के रूप में प्रस्तुत किया गया था। यह IS वक्र जो कि ब्याज दरों और आय स्तरों के विभिन्न संयोजनों पर वस्तु बाज़ार का संतुलन दिखाती है चित्र 17.1 में पुनः दर्शाई गई है। हम इसका भाग 17.4.1 में प्रयोग करेंगे।



चित्र 17.1 में हमने इकाई 15 के चार भाग वाले चित्र के अंतिम भाग (d) में बनी IS वक्र को ही दुबारा प्रस्तुत किया है। उदग्र-अक्ष पर ब्याज की दर तथा क्षैतिज-अक्ष पर राष्ट्रीय आय का स्तर दिखाया गया है।

हमने इस चित्र 17.1 में X-अक्ष पर राष्ट्रीय आय तथा Y-अक्ष पर ब्याज की दर रखी है। IS वक्र का बिंदु (1) 5 प्रतिशत ब्याज दर एवं 20 करोड़ रुपए राष्ट्रीय आय दिखाता है।

इसी तरह, बिंदु (2) पर ब्याज दर = 3 प्रतिशत और राष्ट्रीय आय = 40 करोड़ रुपए। दोनों ही बिंदुओं की यह भी विशेषता है कि इन पर निवेश तथा बचत भी एक-दूसरे के समान रहती हैं। हमें IS के प्रत्येक बिंदु पर यही निवेश बचत समानता प्राप्त होती है। चित्र में बिंदु (3) वस्तु बाज़ार में आधिक्य का द्योतक है। इसी प्रकार, बिंदु (4) पर अभाव की स्थिति है। वस्तुतः IS वक्र से ऊपर के सभी बिंदुओं पर आधिक्य तथा नीचे के सभी बिंदुओं पर अभाव पाया जाता है।

17.3 मुद्रा बाज़ार का संतुलन

मुद्रा बाज़ार के संतुलन की विस्तृत चर्चा हमने इकाई 16 में की है। इस बाज़ार में संतुलन वहाँ होता है जहाँ मुद्रा की माँग और इसकी आपूर्ति समान हो। मुद्रा की आपूर्ति एक प्रकार का स्टॉक है जिसे किसी समय के निश्चित बिंदु पर मापा है। मुद्रा की माँग तीन प्रकार की होती है, जिनमें से दो, अर्थात् विनिमय माँग तथा पूर्वोपाय माँग, को तो हम M_1 द्वारा इकट्ठे ही दिखाते हैं। तीसरा घटक सट्टा माँग है। इसे M_{sp} द्वारा दिखाते हैं। मुद्रा की समग्र माँग M^d द्वारा दिखाई जाती है ($M^d = M_1 + M_{sp}$)। हम यह भी जानते हैं कि M_1 राष्ट्रीय आय का एक वृद्धिमान फलन है तथा M_{sp} ब्याज की दर का हासमान फलन है। अतः ब्याज की दर तथा राष्ट्रीय आय के विभिन्न संयोजनों पर हमें मुद्रा बाज़ार में पृथक्-पृथक् संतुलन प्राप्त होते हैं। इससे हमें मुद्रा बाज़ार में आधिक्य एवं अभाव की दशाओं को जानने में भी सहायता मिलती है।

17.3.1 मुद्रा बाज़ार के घटक

मुद्रा बाज़ार के घटक हैं— मुद्रा की आपूर्ति, मुद्रा की विनिमय एवं पूर्वोपाय माँग; तथा सट्टा माँग। मुद्रा की आपूर्ति का निर्धारण मौद्रिक अधिकारी स्वतंत्र रूप से करते हैं। मुद्रा की

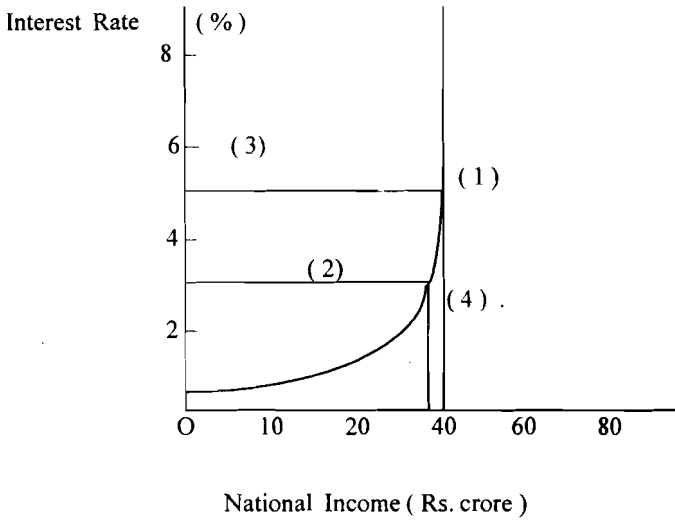
विनिमय तथा पूर्वोपाय माँग राष्ट्रीय आय के साथ-साथ बढ़ती है। मुद्रा की सट्टा माँग ब्याज की दर के साथ घटती है। बहुत ही कम ब्याज दर पर तो यह माँग अपरिमित है। वस्तु बाज़ार की भाँति ही यहाँ भी कुछ घटक स्वतंत्र हैं, कुछ राष्ट्रीय आय पर निर्भर हैं तो अन्य का निर्धारण ब्याज दर द्वारा होता है।

वस्तु एवं मुद्रा बाज़ारों का समन्वयन : प्रतिष्ठित एवं केन्द्रीय अवधारणाएँ

17.3.2 मुद्रा की माँग एवं आपूर्ति की समानता

आपने इकाई 16 में देखा ही था कि मुद्रा बाज़ार में माँग एवं आपूर्ति की समानता ही संतुलन को सुनिश्चित करती है। इसी समानता से यह भी तय हो जाता है कि मुद्रा की सट्टा माँग इस उद्देश्य के लिए उपलब्ध मुद्रा की आपूर्ति के समान हो। (यह मात्रा वस्तुतः कुल आपूर्ति तथा विनिमय+पूर्वोपायी माँगों के बीच अंतर के समान होती है।)

चित्र 17.2



चित्र 17.2 वस्तुतः इकाई 16 में बनाई गई LM वक्र ही है। यहाँ भी उदग्र-अक्ष पर प्रतिशत ब्याज दर और क्षैतिज-अक्ष पर राष्ट्रीय आय दिखाई गई है। LM वक्र का प्रत्येक बिंदु मुद्रा बाज़ार में संतुलन दिखाता है।

हमने चित्र 17.2 में X-अक्ष पर राष्ट्रीय आय तथा Y-अक्ष पर ब्याज की (प्रतिशत) दर दिखाई है। LM वक्र पर बिंदु (1) दिखाता है कि 5 प्रतिशत ब्याज तथा 45 करोड़ रुपये राष्ट्रीय आय होने पर मुद्रा की माँग (तरलता की माँग) मुद्रा की आपूर्ति के समान होगी। इसी तरह, बिंदु (2) यह बताता है कि 3 प्रतिशत ब्याज और 40 करोड़ रुपये राष्ट्रीय आय होने पर भी मुद्रा की माँग एवं आपूर्ति समान होती है। इसी प्रकार से LM वक्र के सभी बिंदु मुद्रा की माँग एवं आपूर्ति की समता ही दिखाते हैं। पर, चित्र का बिंदु (3) मुद्रा बाज़ार में आधिक्य दिखाता है। बिंदु (4) इसी तरह से अभाव का परिचायक है। मुद्रा बाज़ार में असंतुलन का अर्थ है माँग का पूर्ति के समान नहीं होता। यह असंतुलन दो प्रकार का हो सकता है : (1) मुद्रा की आपूर्ति का माँग से अधिक होना, या फिर (2) मुद्रा की आपूर्ति का माँग से कम रह जाना। इस LM वक्र का हम चित्र 17.1 की IS वक्र के साथ प्रयोग कर भाग 17.4 में वस्तु एवं मुद्रा बाज़ारों में एक-साथ संतुलन का निर्धारण करेंगे।

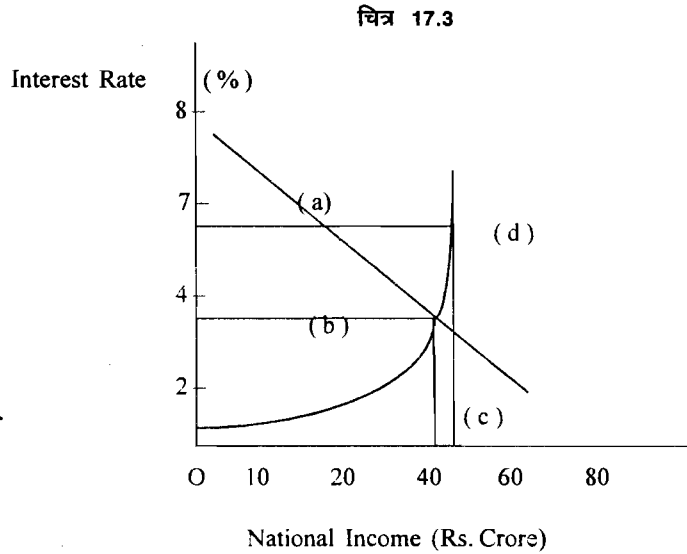
17.4 वस्तु एवं मुद्रा बाज़ारों के एकीकरण

वस्तु एवं मुद्रा बाज़ारों के एकीकरण का अर्थ है दोनों बाज़ारों में एक-साथ संतुलन स्तर का निर्धारण करना कि दोनों में ही ब्याज की दर तथा राष्ट्रीय आय के स्तर का एक ही संयोजन निर्धारित हो। आपने इस इकाई के भाग 17.2 तथा 17.3 में देखा है कि वस्तु

बाज़ार का सार IS तथा मुद्रा बाज़ार का सार LM वक्र में निहित है। अतः दोनों बाज़ारों में एकीकरण स्थापित करने का अर्थ होगा एक ही द्वि-आयामी चित्र, जिसमें X-अक्ष पर राष्ट्रीय आय तथा Y-अक्ष पर ब्याज की दर हो, पर IS तथा LM दोनों वक्रों का अंकन। हम उस प्रक्रिया को भी सुनिश्चित करेंगे जिसके माध्यम से, यदि एक अथवा दोनों ही बाज़ारों में असंतुलन हों, दोबारा संतुलन कैसे स्थापित किया जाए। यह इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि अर्थव्यवस्था में ब्याज दर एवं राष्ट्रीय आय का केवल एक ही संयोजन हो सकता है।

17.4.1 ब्याज दर और राष्ट्रीय आय के विभिन्न संयोजनों पर IS तथा LM वक्र

आइए हम चित्र 17.1 और 17.2 को चित्र 17.3 में इकट्ठे दिखाएँ।

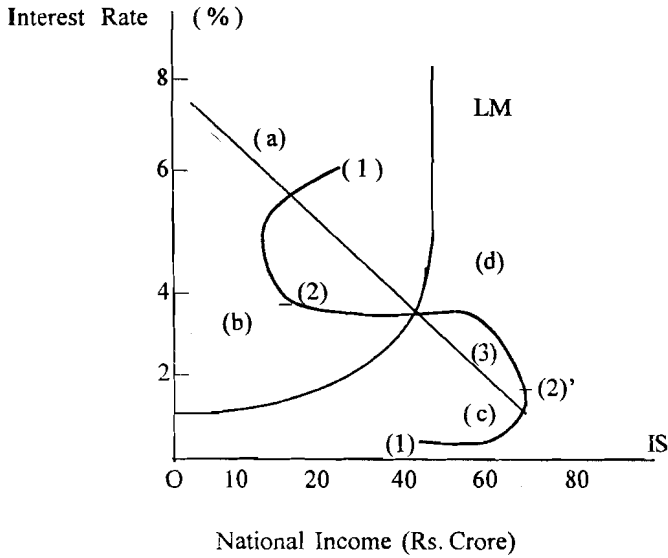


चित्र 17.3 में हमने चित्र 17.1 तथा चित्र 17.2 को एक-साथ बना दिया है। IS वस्तु बाज़ार का संतुलन दिखाती है तो LM मुद्रा बाज़ार का। जहाँ दोनों वक्र एक-दूसरे को काटती हैं वहाँ पर ही ब्याज दर तथा राष्ट्रीय आय का ऐसा संयोजन मिलता है जिसपर अर्थव्यवस्था के वास्तविक एवं मौदिक क्षेत्र में एक-साथ संतुलन स्थापित हो जाता है।

हम जानते ही हैं कि IS तथा LM वक्रों के विभिन्न बिंदु क्रमशः वस्तु एवं मुद्रा बाज़ारों में विभिन्न ब्याज दरों तथा राष्ट्रीय आय स्तरों पर संतुलन दिखाते हैं। चित्र 17.3 का क्षेत्र (a) मुद्रा तथा वस्तु, दोनों बाज़ारों में आधिक्य दिखाता है। क्षेत्र (b) में वस्तु बाज़ार में अभाव, पर मुद्रा बाज़ार में आधिक्य है। क्षेत्र (c) में दोनों बाज़ारों में अभाव रहता है। क्षेत्र (d) में वस्तु बाज़ार में आधिक्य, पर मुद्रा बाज़ार में अभाव है। केवल बिंदु (1) पर ऐसा एकमात्र बिंदु है जहाँ IS तथा LM वक्र काटते हैं तथा दोनों ही बाज़ारों में एक-साथ संतुलन स्थापित हो जाता है। इस संतुलन अवस्था में ब्याज दर 3 प्रतिशत तथा राष्ट्रीय आय का स्तर 40 करोड़ रुपये है। अन्य किसी भी बिंदु पर दोनों बाज़ारों में एक-साथ संतुलन नहीं हो पाता।

17.4.2 वस्तु तथा मुद्रा बाज़ारों में संतुलन पुनः स्थापित करने के लिए कदम

आइए हम चित्र 17.3 को एक बार फिर बनाइए और इसके माध्यम से वस्तु तथा मुद्रा बाज़ारों में पुनः संतुलन की स्थापना की प्रक्रिया को समझें (अगर क्षेत्र (a), (b), (c) अथवा (d) जैसा असंतुलन हो गया हो)। इस प्रक्रिया की व्याख्या हम चित्र 17.4 में कर रहे हैं।



चित्र 17.4 में हम यह समझा रहे हैं कि यदि अर्थव्यवस्था IS तथा LM के छेदन बिंदु से परे हटकर (a), (b), (c) अथवा (d) किसी भी क्षेत्र में चली जाए तो फिर इसमें संतुलन की पुनः स्थापना किस प्रकार होगी?

हम चित्र 17.4 में यह दिखा रहे हैं अर्थव्यवस्था असंतुलन से पुनः संतुलन की ओर किस प्रकार जाती है। आइए (a) में बिंदु (1) पर ध्यान दें। इस बिंदु पर वस्तु तथा मुद्रा, दोनों ही बाजारों में आधिक्य है। वस्तु बाजार में आधिक्य समाप्त करने के लिए **संकुचनवादी राजकोषीय नीति** का प्रयोग आवश्यक हो जाता है (यानि चाहे सरकारी व्यय में कटौती की जाए, या स्वतंत्र निवेश में या फिर कर बढ़ाए जाएँ अथवा निर्यात घटाए जाएँ।) इन सभी से राष्ट्रीय आय कम होती है। बिंदु (1) की बाईं ओर तीर का निशान आय की कमी की ओर इंगित करता है। इसी प्रकार, मुद्रा बाजार में आधिक्य का निदान ब्याज दर कम करना या **विस्तारी मौद्रिक नीति** अपनाना होगा। यही बात बिंदु (1) पर नीचे की ओर निर्देश कर रहे तीन तीर चिह्नों से स्पष्ट होती है। पर संकुचनवादी राजकोषीय और विस्तारी मौद्रिक नीतियों का अनुसरण हमें क्षेत्र (b) के बिंदु (2) तक ले जाता है। यहाँ पर वस्तु बाजार में अभाव तथा मुद्रा बाजार में आधिक्य रहता है। अब हमें अपनी राजकोषीय नीति का स्वरूप बदलना पड़ता है, वह भी मौद्रिक नीति की ही भाँति विस्तारी हो जाती है। यह अंततः हमें बिंदु (3) पर ले जाती है जहाँ वस्तु तथा मुद्रा बाजारों में एक-साथ संतुलन स्थापित हो जाते हैं।

हम क्षेत्र (c) के बिंदु (1') से भी अपनी यह संतुलन यात्रा आरंभ कर सकते हैं। यहाँ दोनों ही बाजारों में अभाव की स्थिति है। इसे ठीक करने के लिए हम संकुचनकारी मौद्रिक तथा विस्तारी राजकोषीय नीति अपनाएँगे। ये नीतियाँ हमें क्षेत्र (d) में बिंदु (2') तक ले जाती हैं। अब वस्तु बाजार में आधिक्य तथा मुद्रा बाजार में अभाव होगा। अब हम मौद्रिक और राजकोषीय नीतियों, दोनों को ही संकुचनकारी रखते हुए बिंदु (2') से बिंदु (3) पर आगे बढ़ते हैं। यहीं हमें अंततः बिंदु (3) पर ले जाती है जहाँ दोनों बाजारों में पुनः एक-साथ संतुलन स्थापित हो जाता है।

संतुलन की पुनः स्थापना कितनी शीघ्रता से संभव हो पाती है यह बात तो IS तथा LM वक्रों के ढाल पर निर्भर करती है। यदि IS वक्र का ढाल LM की तुलना में अधिक हो तो बिंदु (3) का संतुलन भी अधिक तेजी से प्राप्त हो सकता है।

- 1) चित्र 17.4 के क्षेत्र (d) में कोई बिंदु चुनिए। अब संतुलन बिंदु (3) तक पहुँचने के लिए आप क्या कदम उठाएँगे?

.....

.....

.....

.....

.....

- 2) अति-न्यून ब्याज दर पर LM वक्र X-अक्ष के समानांतर क्यों हो जाती है?

.....

.....

.....

.....

.....

- 3) संकुचनकारी मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों में अंतर बताइए।

.....

.....

.....

.....

.....

17.5 IS-LM तकनीक के माध्यम से क्लासिकी दृष्टिकोण

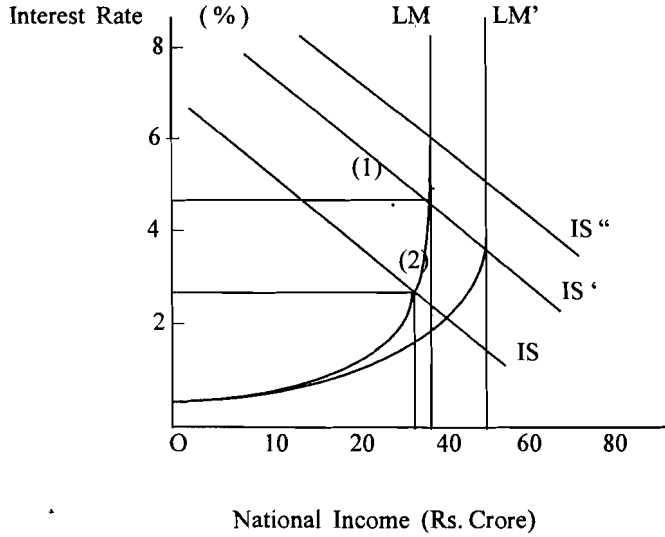
हम 17.4.1 में विकसित IS-LM तकनीक का प्रयोग कर क्लासिकी एवं केंजीय दृष्टिकोणों में भेद स्पष्ट कर सकते हैं। क्लासिकी अर्थशास्त्री मानते थे कि मुद्रा की जरूरत केवल लेन-देन उद्देश्य के लिए पड़ती है। उनका यह भी दृढ़ विश्वास था कि अर्थव्यवस्था सदा ही पूर्ण रोज़गार की अवस्था में रहती है तथा समग्र माँग कम होने के कारण बेरोज़गारी जैसी समस्या कभी पैदा नहीं हो सकती। जे.बी.से. (J.B. Say) ने अपना "बाज़ार का नियम" प्रतिपादित किया, जिसके अनुसार पूर्ति स्वमेव ही अपनी माँग का सृजन कर लेती है। यदि यह मानें कि बचत है ही नहीं "से" का नियम कुछ इस प्रकार कार्य करेगा— वस्तुओं को उत्पादन करने के लिए हमें साधन सेवाएँ चाहिए तथा साधन-स्वामियों को इनकी एवज में साधन आय प्राप्त होती है। इसी साधन आय का प्रयोग कर वे साधन-स्वामी उद्यमों द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं को खरीद लेते हैं।

आय वितरण के सीमांत उत्पादन सिद्धांत से परिचित ही हैं : किसी भी उत्पादन साधन को अभी तक प्रयोग में लाया जाता है जब तक कि उसका सीमांत आगम उत्पाद उसे दिए जाने वाले प्रतिफल के समान नहीं हो जाता। इस प्रकार साधन प्रतिफलों का योग कुल उत्पादन के मूल्य के समान ही होता है। अतः माँग की कमी होने का प्रश्न ही नहीं उठता। यदि बचत होती है तो साधन आय का भाग उपभोग पर खर्च होगा, शेष बचत होगा। उपभोग व्यय उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं पर खर्च होता है तथा बचत निवेश

करने के लिए प्रयोग में आती है। यदि बचत निवेश के ही समान रहे तो भी अर्थव्यवस्था में माँग का अभाव नहीं हो पाएगा। क्लासिकी अवधारणा में बचत-निवेश समानता ब्याज की दर में परिवर्तन से होती है। श्रम की माँग उसकी पूर्ति में समानता वास्तविक मज़दूरी दर में परिवर्तन से आती है। हम क्लासिकी अर्थशास्त्रियों का दृष्टिकोण IS-LM वक्र की तकनीकों द्वारा समझा सकते हैं (देखें चित्र 17.5)।

वस्तु एवं मुद्रा बाजारों का समन्वयन : प्रतिष्ठित एवं केन्द्रीय अवधारणाएँ

चित्र 17.5



चित्र 17.5 में हमने दिखाया है कि बिंदु (1) से आगे LM वक्र Y-अक्ष के समानांतर हो जाती है। इसे क्लासिकी विस्तार-सीमा (range) कहा जाता है। इसका अर्थ यह है कि यदि निवेश अथवा राजकीय व्यय की वृद्धि से IS' यह खिसककर IS'' हो जाए तो ब्याज दर 5 प्रतिशत से बढ़कर 7.5 प्रतिशत हो जाएगी पर राष्ट्रीय आय 45 करोड़ रुपये ही रहेगी। यदि राष्ट्रीय आय को बढ़ाकर 55 करोड़ रुपये करना हो तो मुद्रा की आपूर्ति को बढ़ाना होगा अर्थात् LM को खिसककर LM' तक पहुँचाना होगा (IS' को स्थिर रखते हुए)।

यह आसानी से समझा जा सकता है कि मौद्रिक नीति के प्रभाव का निर्धारण करने में IS वक्र के ढाल का बहुत महत्व होता है। यदि IS वक्र IS' से अधिक ढालू (sleeper) होता तो राष्ट्रीय आय को 55 करोड़ तक पहुँचाने के लिए कहीं अधिक मौद्रिक विस्तार की आवश्यकता होती। दूसरे शब्दों में, IS के अधिक ढालू होने से मौद्रिक प्रभावशाली रहती है। यदि IS कम ढालू हो तो मौद्रिक नीति अधिक प्रभावशाली हो जाती है।

17.5.1 क्लासिकी दृष्टिकोण के नीतिगत प्रभाव

आइए देखें कि क्लासिकी दृष्टिकोण का क्या नीतिगत अर्थ है। एक बार फिर चित्र 17.5 पर गौर कीजिए। इस चित्र 45 करोड़ रुपये की राष्ट्रीय आय के संतुलन स्तर पर दोनों बाजार (वस्तु एवं मुद्रा बाजार) संतुलन में है। अगर पूर्ण रोज़गार संतुलन आय स्तर 55 करोड़ रुपये हो तो उसकी प्राप्ति तभी संभव होगी जब हम LM को खिसककर LM' तक पहुँचने दें अर्थात् मुद्रा की पूर्ति को बढ़ने दें। LM का कितना खिसकना होगा, यह बात IS के ढाल पर निर्भर है। हमारे चित्र में यह पूर्ण रोज़गार संतुलन बिंदु (2) से जुड़ा है, जहाँ IS' तथा LM' परस्पर काटती है। बिंदु (2) पर राष्ट्रीय आय का संतुलन स्तर 55 करोड़ रुपये है। दूसरी ओर, यदि IS वक्र IS' वक्र से अधिक ढालू होता तो LM वक्र को और ज्यादा खिसकाना पड़ता। अर्थात् पूर्ण रोज़गार स्तर पाने के लिए मुद्रा की आपूर्ति और ज्यादा बढ़ानी पड़ती। अतः हमें तुरंत यह अनुभूति होती है कि जब LM अपने क्लासिकी विस्तार सीमा में हो अर्थात् Y-अक्ष के स्थानांतर हो तो राष्ट्रीय आय के संतुलन स्तर को

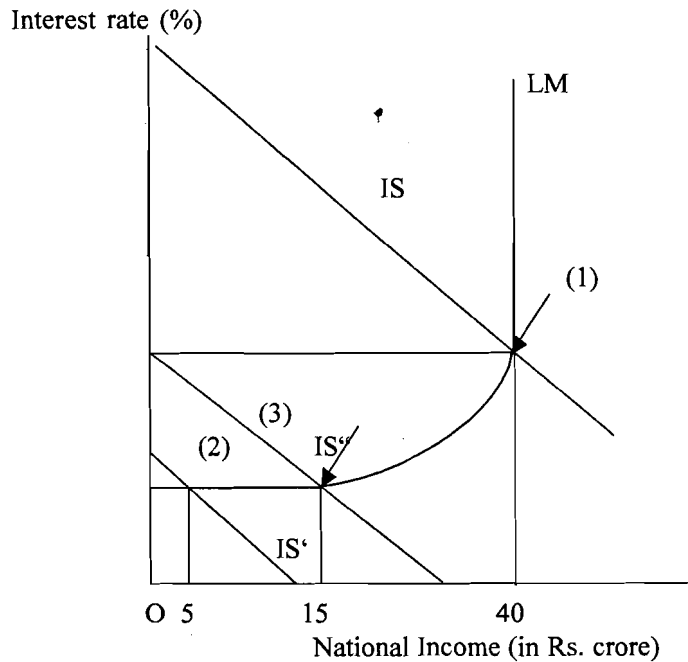
प्रभावित करने वाली एकमात्र नीति मौद्रिक नीति ही होती है। ऐसी दशा में राजकोषीय नीति तो केवल ब्याज की दर को प्रभावित कर पाती है। यदि विस्तारी राजकोषीय नीति का अनुसरण कर हम IS' से खिसककर IS'' पर पहुँच जाए तो भी ब्याज की दर अवश्य 5 प्रतिशत से बढ़कर 7.5 प्रतिशत हो जाती है और राष्ट्रीय आय के 45 करोड़ रुपये के स्तर पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

अतः क्लासिकी विस्तार-सीमा में केवल मौद्रिक नीति ही प्रभावपूर्ण होती है। मौद्रिक नीति का प्रभाव भी IS के ढाल पर ही निर्भर है। यदि IS वक्र अधिक ढालू होगा तो मौद्रिक नीति कम प्रभावपूर्ण रहेगी और यदि कम ढालू होगा तो यह मौद्रिक नीति अधिक प्रभावशाली होगी। विस्तारी राजकोषीय नीति (IS की बाहर की ओर खिसकन) से ब्याज की दर में वृद्धि के पीछे कारण यह है कि अथवा राजकीय व्यय में वृद्धि से राष्ट्रीय आय बढ़ेगी। कितनी बढ़ेगी यह गुणक के मूल्य पर निर्भर है। इस आय वृद्धि के फलस्वरूप मुद्रा की विनिमय माँग में वृद्धि होगी। अतः मुद्रा की आपूर्ति स्थिर रहने की दशा में सट्टेबाजी के लिए उपलब्ध मुद्रा की मात्रा कम रह जाएगी। इसी से ब्याज दर बढ़ेगी। हम यह भी कह सकते हैं कि सरकारी निवेश अथवा व्यय की वृद्धि से निजी निवेश गिर जाता है और परिणामस्वरूप हासकारी प्रभाव (crowding-out effect) शुरू हो जाता है।

17.6 केन्जीय दृष्टिकोण और IS-LM वक्र विश्लेषण

क्लासिकी विस्तार-सीमा में LM वक्र Y-अक्ष के समानांतर था। अब हम एक दूसरी चरम सीमा लेते हैं जहाँ LM वक्र X-अक्ष के समानांतर हो जाता है जहाँ कि मुद्रा की माँग अपरिमित (infinity) हो जाती है। इस विस्तार-सीमा में केन्जीय दृष्टिकोण अपने सबसे प्रभावशाली रूप में होता है। ऐसा चित्र 17.6 की सहायता से दिखाया जा सकता है—

चित्र 17.6



चित्र 17.6 में हम LM वक्र के X-अक्ष के समानांतर भाग पर ही अपना ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। यही केन्जीय अवधारणा का पूर्ण प्रभावोत्पादकतापूर्ण क्षेत्र है। यहाँ पर अर्थव्यवस्था 'नकदी जाल' में बंधी होती है और मौद्रिक नीति के परिवर्तन प्रभावी नहीं हो पाते पर राजकोषीय नीति पूरी तरह से प्रभावपूर्ण सिद्ध होती है।

दर = 3 प्रतिशत तथा राष्ट्रीय तथा राष्ट्रीय आय = 40 करोड़ रुपये है। ब्याज दर 0.5 प्रतिशत पर LM वक्र X-अक्ष के समानांतर हो जाता है। यही 'नकदी जाल' की स्थिति है। यहाँ सट्टेबाजी के लिए मुद्रा की माँग की अपरिमित हो जाती है। यह विस्तार-सीमा, 'केन्द्रीय विस्तार सीमा' कहलाती है।

केन्द्रीय अथवा आय पर संतुलन जाल विस्तार-सीमा में 0.5 प्रतिशत ब्याज दर पर 5 करोड़ रुपये की राष्ट्रीय आय पर संतुलन है। यह बिंदु (2) द्वारा निर्दिष्ट है। यदि हम राष्ट्रीय आय को बढ़ाकर 15 रुपये तक पहुँचाना चाहें तो मौद्रिक नीति सफल नहीं होगी क्योंकि ब्याज दर 0.5 प्रतिशत स्तर पर ही रहेगा। दूसरी ओर, स्वतंत्र निवेश या फिर राजकीय व्यय में वृद्धि करके गुणक प्रभाव द्वारा राष्ट्रीय आय में यह वृद्धि सहज ही प्राप्त कर सकती हैं। आप जानते ही हैं कि स्वतंत्र निवेश और राजकीय व्यय की वृद्धि को हम IS के दाहिनी ओर खिसकाव द्वारा दिखाते हैं। अतः यदि यह वक्र IS' से खिसककर IS" हो जाए तो राष्ट्रीय आय भी 5 से बढ़कर 15 करोड़ रुपये हो सकती है। IS वक्र के इसी खिसकाव को विस्तारी राजकोषीय नीति का नाम दिया जात है। इसके विपरीत, राष्ट्रीय आय को कम करने के लिए हमें संकुचनकारी राजकोषीय नीति अपनानी होती है।

अतः यह स्पष्ट है कि इस केन्द्रीय विस्तार-सीमा में उपयुक्त नीति केवल राजकोषीय नीति, यानी राजकीय व्यय अथवा कराधान में परिवर्तन की नीति ही है।

17.6.1 केन्द्रीय दृष्टिकोण के नीतिगत अर्थ

एक बार फिर चित्र 17.6 पर ध्यान दें। प्रारंभिक संतुलन स्तर बिंदु (2) पर है जहाँ ब्याज की दर 0.5 प्रतिशत है तथा राष्ट्रीय आय 5 करोड़ रुपये है। अगर पूर्ण रोजगार आय स्तर 15 करोड़ रुपये हो तो उस तक पहुँचने के लिए स्वतंत्र निवेश या फिर राजकीय व्यय बढ़ाना आवश्यक हो जाता है। यही बात IS' से IS" तक के खिसकाव द्वारा दिखाई है क्योंकि LM तो X-अक्ष के समानांतर है। यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि इस अवस्था में पूर्ण रोजगार स्तर वहाँ प्राप्त होता है जहाँ IS" तथा LM वक्र एक-दूसरे को काटने हैं यानी बिंदु (3) पर। यहीं पर राष्ट्रीय आय का संतुलन स्तर 15 करोड़ रुपये होता है। इस प्रकार केन्द्रीय विस्तार-सीमा में जब LM वक्र X-अक्ष के समानांतर हो जाता है तो आय के स्तर में परिवर्तन लाने के लिए केवल राजकोषीय नीति कारगर होती है। अगर मौद्रिक नीति अपनाई जाती है तो यह असफल सिद्ध होगी क्योंकि यह ब्याज की दर में परिवर्तन द्वारा लागू की जा सकती है, जबकि इसके अपनाने से ब्याज की दर में कोई परिवर्तन नहीं होता।

एक अन्य महत्वपूर्ण बात यह है कि भाग 17.5.1 में जिस हासकारी प्रभाव की हमने चर्चा की थी, वह प्रभाव इस केन्द्रीय विस्तार-सीमा में पूर्णतः अनुपस्थित रहता है। इसी कारण यहाँ गुणक प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। हम यह भी कह सकते हैं कि इस नकदी जाल विस्तार-सीमा में केन्द्र बाजार के अस्तित्व को ही नकार देते हैं।

आइए अब अंत में हम केन्द्रीय तथा क्लासिकी विस्तार-सीमाओं के बीच मध्यवर्ती विस्तार-सीमा को देखें। पाठक स्वयं ही यह कार्य कर सकते हैं। चित्र 17.6 के बिंदु (1) को देखिए : यहाँ ब्याज दर = 3 प्रतिशत तथा राष्ट्रीय आय = 40 करोड़ रुपये। मान लीजिए कि आय का पूर्ण रोजगार स्तर 42 करोड़ रुपये है। यह स्तर प्राप्त करने के लिए हम तो LM वक्र को स्थिर रख, LM वक्र को सीधे हाथ की ओर खिसका सकते हैं। यही प्रभाव IS वक्र को स्थिर रखकर LM वक्र को सीधे हाथ की ओर खिसकाकर भी प्राप्त हो सकता है। यही नहीं, हम IS तथा LM दोनों को ही सीधे हाथ की ओर खिसकाकर भी इस पूर्ण रोजगार स्तर की आय पर पहुँच सकते हैं। यह स्वाभाविक ही है कि यदि दोनों वक्रों को एक-साथ खिसकाएँ तो केवल एक ही वक्र खिसकाने की तुलना में, दोनों अपेक्षाकृत कम खिसकाने से ही काम चल सकता है।

राष्ट्रीय आय के पूर्ण रोजगार स्तर की प्राप्ति में मौद्रिक एवं राजकोषीय नीतियों की सापेक्ष प्रभावोत्पादकता IS तथा LM के ढालों पर निर्भर करती है। सामान्य नियम यह है कि

यदि IS वक्र किसी दिए हुए LM वक्र की तुलना में कम ढालू हो तो राजकोषीय नीति अधिक प्रभावोत्पादक होती है। दूसरी ओर, यदि IS वक्र अधिक ढालू हो तो मौद्रिक नीति अधिक प्रभावपूर्ण सिद्ध होगी।

ऊपर बताई गई मौद्रिक तथा राजकोषीय नीतियों की सापेक्ष प्रभावोत्पादकता की चार संभावनाओं का आकलन पाठक स्वयं चित्र की सहायता से करके देख सकते हैं।

बोध प्रश्न 2

1) 'हासकारी प्रभाव' (crowding out effect) के कार्य करने में क्या-क्या चरण निहित हैं?

.....
.....
.....
.....
.....

2) यदि IS वक्र दिया हुआ हो और LM वक्र का ढाल हो जाए तो आप किस नीति की सिफारिश करेंगे—मौद्रिक अथवा राजकोषीय?

.....
.....
.....
.....
.....

3) यदि कर बढ़ा दिया जाए और वस्तु बाज़ार के साथ-साथ मुद्रा बाज़ार भी हो तो तर्क द्वारा समझाइए कि इससे कि प्रकार राष्ट्रीय आय कम गिरेगी।

.....
.....
.....
.....
.....

17.7 सारांश

हमने इस इकाई का आरंभ वस्तु बाज़ार के घटकों तथा उसके संतुलन से किया है। फिर वस्तु बाज़ार में संतुलन प्राप्त करने के उद्देश्य से निवेश-बचत समानता की चर्चा की है। ब्याज दर तथा राष्ट्रीय आय के विभिन्न संयोजनों से ही हम निवेश-बचत समानता तक पहुँचे हैं। इसी प्रकार, ब्याज दर और आय के विभिन्न संयोजनों पर मुद्रा बाज़ार का संतुलन, उसके विभिन्न घटकों, मुद्रा की माँग तथा पूर्ति की समानता के बारे में चर्चा की गई है।

ब्याज दर तथा राष्ट्रीय आय का एकमात्र ऐसा संयोजन प्राप्त करने के लिए जिस पर वस्तु बाज़ार और मुद्रा बाज़ार में एक-साथ संतुलन हो, हमने IS तथा LM वक्रों को सहायता से वस्तु और मुद्रा बाज़ारों के एकीकरण करने के बारे में चर्चा की है। यदि यहाँ एक या दोनों बाज़ार असंतुलन में हों, तो पुनः संतुलन में लाने की प्रक्रिया का विश्लेषण भी हमने किया है।

अंततः IS-LM तकनीक द्वारा क्लासिकी, केन्जीय तथा मध्यवर्ती विस्तार-सीमाओं की भी विस्तृत चर्चा की गई है। क्लासिकी एवं केन्जीय दृष्टिकोणों के नीतिगत अर्थों पर चर्चा के साथ हमने इस इकाई का समापन किया है।

वस्तु एवं मुद्रा बाजारों का समन्वयन : प्रतिष्ठित एवं केन्जीय अवधारणाएँ

17.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

Lipsey, Richard G (1983) : *An Introduction to Positive Economics* (6th Ed., ELBS and Weidenfeld and Nicolson: London (Chapter 35-36)

Shapiro, Edward, 1984: *Macro Economic Analysis* (5th Ed.); Galgotia Publications: New Delhi (Chapter 1-12)

Samuelson, Paul 8A (1973) : *Economic* (9th Ed.); International Student Edition, McGraw-Hill Kagakusho Ltd.: Tokyo (11-12)

17.9 बोध प्रश्नों के उत्तर अथवा दिशा-संकेत

बोध प्रश्न 1

- 1) क्षेत्र (d) में मुद्रा बाजार में अभाव तथा वस्तु बाजार में आधिक्य है। अतः संकुचनकारी मौद्रिक नीति (ब्याज दर वृद्धि) तथा ऐसी ही राजकोषीय नीति (राष्ट्रीय आय कम करना) उचित होगा। एक तीर ऊपर तथा दूसरा बाईं ओर इंगित करेगा। ये नीतियाँ हमें क्षेत्र (a) में पहुँचा देंगी। वहाँ से संतुलन बिंदु (3) तक का मार्ग तो हम जानते ही हैं (चित्र 17.4)।
- 2) जब ब्याज दर बहुत कम होती है तो सभी को इनके बढ़ने की आशा होती है। इसे बॉण्डों की कीमतें गिरने की आशा भी कहा जा सकता है। अतः लोग अपनी सम्पत्ति को सरल रूप में ही रखना बेहतर मानते हैं। इसी कारण न्यून ब्याज दर पर मुद्रा की माँग अपरिमित हो जाती है।
- 3) संकुचनकारी मौद्रिक नीति में मुद्रा की आपूर्ति कम की जाती है और ब्याज की दर बढ़ा दी जाती है। ब्याज दर वृद्धि से निवेश कम होकर राष्ट्रीय आय कम होती है। इसी से इसे संकुचनकारी नीति कहा जाता है।

कर आगम को स्थिर रख सरकारी व्यय में कटौती अथवा सरकारी व्यय स्थिर रखकर आगम में वृद्धि करना संकुचनकारी राजकोषीय नीति कहा जाता है। इस दशा में राजकीय व्यय तथा कर गुणकों के प्रभावस्वरूप राष्ट्रीय आय गिर जाती है।

बोध प्रश्न 2

- 1) सरकारी/निवेश व्यय की वृद्धि से राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। यह वृद्धि गुणक के मूल्य पर निर्भर होती है। राष्ट्रीय आय बढ़ने से मुद्रा की विनिमय माँग बढ़ती है और सट्टेबाजी के लिए उपलब्ध मुद्रा कम रह जाती है। इस कारण ब्याज की दर बढ़ती है जिसके परिणामस्वरूप निजी निवेश घटता है तथा इसी से राष्ट्रीय आय में कमी आ जाती है। अतः स्वतंत्र व्यय में प्रारंभिक वृद्धि से राष्ट्रीय आय में उतनी वृद्धि नहीं हो पाती जितनी कि मुद्रा बाजार नहीं होने की दशा में संभव हो सकती थी।
- 2) यहाँ राजकोषीय नीति अधिक उपयुक्त होगी क्योंकि हम केन्जीय विस्तार-नीति में पहुँच रहे हैं, LM वक्र का ढाल कम हो रहा है।
- 3) कर गुणक हम $-C^1-C$ द्वारा दिखाते हैं। यहाँ $C =$ सीमात उपभोग प्रवृत्ति है।

कर में वृद्धि से राष्ट्रीय आय में कमी इसी कर गुणक के आकार पर निर्भर है। राष्ट्रीय आय की इस कमी से मुद्रा की विनिमय माँग में कमी आती है। मुद्रा की आपूर्ति स्थिर रहने पर इससे सट्टेबाजी के लिए उपलब्ध मुद्रा की मात्रा बढ़ जाती है। इसके परिणामस्वरूप ब्याज दर कम होती है। इससे राष्ट्रीय आय बढ़ने लगती है।

अतः मुद्रा बाजार के समावेश के कारण कर वृद्धि से राष्ट्रीय आय उतनी नहीं गिरती।